International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 03-06-2024, Accepted: 26-06-2024, Published: 18-07-2024
Volume 10, Issue 4, 2024, Page No. 29-32

# भारतीय संस्कृति की सामान्य विषेशताऐं तथा आधुनिकीकरण के प्रभाव क्षेत्र (ग्रामीण महिलाओं के सन्दर्भ में)

**लक्ष्मी नारायण अग्रवाल**
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, एस.एस.एम. (पी.जी.) कालेज, मानिकपुर, हाथरस, उत्तर प्रदेश, भारत

**सारांश**
संस्क्ति का उद्‌भव एंव विकास मानव के मध्य ही होता है फिर भी संस्कृति निर्माण की क्षमताएं मनुष्य को प्रकृति से ही मिलती है और वह इस अर्थ में कि मानव को प्रकृति कुछ इस प्रकार से ही मिलती है और वह इस अर्थ में कि मानव को प्रकृति कुछ इस प्रकार की शारीरिक तथा मानसिक विषेशताएं व क्षमताएं प्राप्त हैं जिनके सम्मिलित उपयोग से संस्कृति–निर्माण के रूप में प्रतिष्ठित करने में मानव की भाशा तक प्रतीकों के माध्यम से आदान–प्रदान कर क्षमता सर्वप्रमुख है किन्तु फिर भी मानव ही प्रतीकों को जन्म देता है तथा उन्हें अर्थयुक्त करता है। मानव ही भाशा के माध्यम से ज्ञान–विज्ञान के भण्डार को भरता है। मानव तथा पशु में सबसे महत्वपूर्ण अन्तर भाषा का ही है। भाषा के न होने पर पशुओं मे ज्ञान व संस्कृति का पूर्ण अभाव होता है। मानव ज्ञान के आधार पर ही सॉस्कृतिक तत्वों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तान्तरित करता है। मानव के द्वारा ही नवीन सांस्कृति तत्वों का जन्म, सांस्कृतिक व्यवस्था की स्थिरता तथा सॉस्कृतिक निरन्तरता सम्मव होती है। अतः संस्कृति के निर्माण, विकास, परिवर्तन तथा विस्तार में भाशा व प्रतीकों (सांस्कृतिक तत्वों) का योगदान सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जा सकता है।

**मूलशब्द:** भारतीय संस्कृति, ग्रामीण महिलाओं, मानसिक विषेशताएं

## ‘संस्कृति’ शब्द की संकल्पना

संस्कृति शब्द संस्कृत भाशा के ‘कृ’ धातु में ‘सम’ उपसर्ग लगाकर ‘सुर’ का आगम करके ‘क्रिम’ प्रत्यय से मिलकर बना है, जिसका व्युत्पत्ति मूलक अर्थ है– सम (सम्यक) कृति अर्थात् सदाचार युक्त सम्यक कृति। सम्यक चेष्ठा मनुष्य की लैकिक, पारलौकिक उन्नति के अनुकूल आचार–विचार ही संस्कृति हैः–

यद् यतस्या द्वाचिकं सम्यक–
कर्मविशाभिः संज्ञकम् –––––– (शुक्रनीति), 2/60

इस प्रकार सम्यक वाचिक कर्म ही विद्या है। संस्कृति सम (सम्यक) कृति कर्म है। वाचिक कर्म के मूल में मानसिक कर्म और कार्मिक कर्म और कार्मिक कर्म होने के कारण शास्त्रानुसार मानसिक, वाचिक तथा कार्मिक सत्कर्म ‘संस्कृति’ है। अंग्रजी में इसके लिए ‘कल्चर’ शब्द प्रयोग होता है। जो लैटिन शब्द ‘कुल्चुरा’ से बना है जिसका अर्थ पशुपालन या पौधा लगाना है इसी सन्दर्भ में (1998) में प्रो. आचार्य पी.के. ने लिखा भी है।

**‘‘कल्चर इज दि एक्ट ऑफ कल्टीवेशन एण्ड दि स्टेट ऑफ वीइंग कल्टीवेड।’’**

वस्तुतः यह कन्टीवेशन या ‘संस्कार’ आत्मा है। इसी ने अपने विशुद्ध रूप में संस्कृति आत्मिक होती है। इसका स्वरूप चिन्मय है तथा सम्बन्ध साहित्य, संगीत, कला, दर्शन, नृत्य, संगीत, सौन्दर्य, परम्परा, विश्वास व प्रथाओं से है; तो दूसरी ओर मानवीय मूल्यों– सत्य, अहिंसा, दान, दया, धर्म, मैत्री, करूणा, अपरिग्रह आदि से है। समाजशास्त्रीय अवधारणा में यह सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक संकल्पना में परिभाशा है। परिणामतः इसके भौतिक तथा अभौतिक दो पक्ष उभर कर सामने आते है।

किन्तु संस्कृति शब्द का उद्‌भव ‘संस्कार’ या ‘परिमार्जित’ से है जिसका अर्थ हैः शुद्धि की प्रकिया’ का ‘परिश्कार’। आशय यह है कि संस्कृति का सम्बन्ध उन सभी वस्तुओं तथा विचारों से है जो व्यक्ति का परिश्कार कर सकें। अन्य शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि संस्कृति का अभिप्राय उस सामाजिक सीख से है जिसके द्वारा मानव, समाज अनुकूलन करना सीखता है। प्रत्येक व्यक्ति जीवन के आरम्भ से ही परिवार, विद्यालय तथा बाहरी जगत के उन व्यवहारों का सीखना प्रारम्भ कर देता है जिन्हें उसके समाज मे आवश्यक समझा जाता है। एक ओर व्यक्ति को अपनी प्रथाओं व परम्पराओं के अनुसार कार्य करना होता है, तो दूसरी ओर उसके सामने नवीन वस्तुओं के उपयोग करने की विधियों का सीखने की समस्या रहती हैं। इस प्रकार प्रत्यके व्यक्ति किसी न किसी समाज का सदस्य होने के कारण उसमें प्रचलित भौतिक तथा अभौतिक व्यवहारों को सीखता है जो उसकी संस्कृति के अंग कहलाते हैं। साहित्याकारों के लिए ‘संस्कृति’ जीवन का प्रकाश तथा कोमलता है, तो इतिहासकारों के लिए उस क्षेत्र का कलात्मक अथवा बौद्धिक विकास ही उसकी संस्कृति है। किन्तु समाजशास्त्रियों ने संस्कृति शब्द का प्रयोग विभिन्न प्रसंगों में किया है। उनके लिए संस्कृति, सीखे हुए व्यवहार की वह समग्रता है जिसमें एक बच्चे का व्यक्तित्व पलता तथा पनपता है। टायलर के शब्दों में– ‘संस्कृति वह जटिल समग्रता है जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, आचार, विचार, कानून, प्रथा एंव इसी प्रकार की उन सभी क्षमताओं का समावेश होता है जिन्हें मानव समाज का सदस्य होने के नाते प्राप्त करता है।’ परन्तु समाजशास्त्री बोगाड्‌र्स के अनुसार– ‘किसी समूह के कार्य, विचार करने के सभी तरीकों का नाम ही संस्कृति है’ सर्वश्री फिशर जे.एच. ने संस्कृति को अति संक्षेप में परिभाषित करते हुए लिखा है कि– ‘संस्कृति, उन सभी संस्थओं की व्यवस्था है जिसमें एक समाज के सभी सदस्य भाग लेते हैं। हर्शकोविट्स के शब्दों में– ‘संस्कृति, पर्यावरण का मानव निर्मित भाग है। इस प्रकार विभिन्न विद्वानों ने संस्कृति शब्द की अवधारणा को अपने–अपने ढंग से व्यक्त किया है। साधारण अर्थ में सस्कृति व सभ्यता एक–दूसरे से पूर्णतः भिन्न हैं। यद्यपि समाज को प्रगतिशील बनाने में दोंनों ही समान रूप से महत्वपूर्ण हैं किन्तु इनकी प्रकृति में कुछ आधारभूत भिन्नताएं होती हैं। प्रायः सभ्यता का अर्थ भौतिक साधनों में होने वाली वृद्धि से लिया जाता है, किन्तु सभी भौतिक वस्तुओं का सभ्यता के अन्तर्गत सम्मिलित नहीं किया जा सकता, अपितु केवल वे वस्तुंए जिनके माध्यम से हमारी आवश्यकओं की पूर्ति होती है सभ्यता के अन्तर्गत आती हैं। अतएव संस्कृति तथा सभ्यता दोनों घनिश्ठ रूप से सम्बन्धित अवश्य कही जा सकती है। जिन वस्तुओं से सभ्यता का निर्माण होता है, वे संस्कृति द्वारा भी बहुत बड़ी सीमा तक प्रभावित होती हैं। यथा–घर सभ्यता का अंग है लेकिन घर की सजावट करना, संस्कृति से सम्बन्धित है फलतः सभ्यता तथा संस्कृति को एक

दूसरे से पृथक नहीं किया जा सकता, क्योंकि प्रत्येक समाज में सभ्यता के विकास से ही संस्कृति का विकास होना सम्भव होता है। इस प्रकार संस्कृति हमारे सम्पूर्ण सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक तथा भौतिक जीवन की अभिव्यक्ति हैं जबकि सभ्यता एक माध्यम है।

हमारे देश की सभ्यता विश्व में सबसे प्राचीन मानी जाती है। मोहन जोदड़ो तथा हड़प्पा के अवशेश इस बात के साक्षी हैं कि सिन्धु घाटी की सभ्यता नील नदी की सभ्यता से भी प्राचीन है। यदि धर्म और दर्शन में भारत को विश्व का पथ प्रदर्शक कहा जाय तो उसमें भी कोई अतिश्योक्ति न होगी। बोगार्डस ने संस्कृति का किसी समूह के कार्य करने और विचार करने के सभी तरीकों को माना हैः 'कल्चर इज आल दि वेज आफ डूइंग एण्ड थिंकिंग ऑफ ए ग्रुफ' परन्तु आगवर्न एण्ड निमकॉफ ने भौतिक अभौतिक संस्कृति की संकल्पना की है।

निम्न विशेशताऐ 'संस्कृति की प्रकृति तथा अवधारणा' को स्पश्ट करने में सहायक होगी–

1. संस्कृति अनुकरणीय व्यवहार है एंव सीखी जाती है।
2. संस्कृति में हस्तान्तारित होने का लक्षण निहित होता है।
3. प्रत्येक समाज की संस्कृति एक विषेश प्रकार की होती है अर्थात् पृथक होती है।
4. संस्कृति में सामाजिक गुण निहित होता है।
5. समूह के लिए संस्कृति आदर्श होती है।
6. संस्कृति मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति करती है।
7. संस्कृति में अनुकूलन करने का लक्षण निहित होता है।
8. संस्कृति में सन्तुलन तथा संगठन होता है।
9. संस्कृति, अधिवैयक्तिक तथा अधि–सावयवी होती है।
10. संस्कृति, गतिशील तथा निरन्तर परिवर्तनशील होती है।
11. हमारे जीवन की दिशा निर्धारित करती है, साथ ही हमारी जीवन विधियों को नियंत्रित एंव निर्देशित भी करती है।

## भारतीय संस्कृति की अवधारणा एवं विषेशताएँ

भारतीय समाज की संस्कृति सम्बन्धी अवधारणा को सुस्पश्ट करने के लिए सर्वप्रथम भारतीय सामाजिक संरचना एवं संस्कृति के विविध आयामों को उभारना परमावश्यक ही नहीं अपितु समीचीन होगा। इसके लिए अनुसंधित्यु ने कुछ प्रश्नों को चुनकर उनको स्पश्ट करने का प्रयास किया है। यथा–भारतीय सामाजिक संरचना के आधार एवं स्तर क्या है? भारतीय संस्कृति की समरूपता तथा विविधता के पहलू क्या हैं? भारतीय समाज दर्शन की अभिव्यक्ति किन मूल्यों एवं दृष्टिकोणों पर होती है? भारत में पुनर्जागरण एंव आधुनिकीरण का क्या स्वरूप है? क्या आधुनिकीकरण की अवधारणा भारतीय सामाजिक गतिशीलता को अभिव्यक्त करने में समर्थ एवं सार्थक है? क्या भारतीय समाज समाज एवं संस्कृति के अध्ययन का कोई अलग उपागम है, जो अन्य समाज के अध्ययन के उपागमों से भिन्न है? क्याा भारतीय समाज एंव संस्कृति का अध्ययन क्षेत्र वृहद एवं व्यापक है और विविध जटिलताओं को समाविश्ट किए हुए है। जो प्रकृति को दृष्टि से व्याख्यात्मक हैं।

समाज की मानक अवधारणा मैकाइवर एण्ड पेज ने प्रस्तुत करते हुए इसे रीतियों, कार्य प्रणालियों अधिकार एंव पारस्परिक सहायता, अनेक समूहों तथा विभागों, मानव व्यवहार के नियंत्रणों एंव स्वतंत्रताओं की एक व्यवस्था के रूप में स्वीकारा है। ऐलीचिर्नाय ने समाज को उसकी प्रमुख संस्थाओं–पारिवारिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक, शैक्षिक आदि के रूप में विश्लेशित किया है। समाजशास्त्रीय विश्लेशण के अन्तर्गत समाज में संस्थाओं की संरचना तथा सामाजिक सम्बन्धों की संरचना इन दोनों प्रारूपों में समाज का विश्लेशण करना समन्वित प्रयास होगा।

किसी भी समाज की एक जीवन शैली होती है जिसे संस्कृति कहते हैं। यदि समाज को निचोड़ा जाय तो उसमें से व्यक्ति अभिभूत होता है। और यदि व्यक्ति को पुनः निचोड़ा जाय तो उसमें से प्रस्थिति एंव भूमिका का आविर्भाव होता है, प्रस्थिति की व्यवस्था एंव भूमिका का निर्वहन कैसे किया जाय, यह संस्कृति तय करती है।

भारत सामाजिक संरचना क्षेत्रीय या स्थानीय विशेशताओं के अनुसार जातियों में विभक्त है। जाति व्यवस्था; सामाजिक पद क्रम में संरचित वह व्यवस्था है जिसके माध्यम से दूसरों को बिना गुलाम बनाए, उनके श्रम का लाभ उठाया जा सकता है। कौशाम्बी ने उत्पादन के प्राचीन स्तर पर जाति को एक वर्ग के रूप में स्वीकारा है। एक समूह के रूप में जाति, वंश परम्परागत एवं सजातीय विवाह पर आधारित अमुक्त व्यवस्था है। हिन्दू, जाति समूहीकरण परिलक्षित होता है।

भारतीय समाज के सामाजिक स्तरीकरण को दो स्तरों पर समझा जा सकता हैः ग्रामीण एवं स्थानीय स्तर की सामाजिक संरचना तथा औद्योगिक नगरीय स्तर की सामाजिक संरचना। शक्ति संरचना, पैरामिड के समान कही जा सकती है जिसके निचले स्तर परः ग्रामीण शक्ति संरचना एंव नेतृत्व है। ग्रामीण शक्ति संरचना– ग्राम पंचायत, जाति पंचायत, न्याय पंचायत, विकास खण्ड समितियों में प्रतिनिधित्व एंव प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष नेतृत्व के आधार पर अभिव्यक्त होती है। दूसरे स्तर परः मध्य स्थिति शक्ति संरचना के अन्तर्गत लोकसभा तथा विधानसभा हेतु चयनित प्रतिनिधि, कर्मचारी तंत्र आदि आते है, शक्ति संरचना का तृतीय स्तर पर नीती निर्धारण करने वाला वर्ग है। स्वतत्रंता प्राप्ति के उपरान्त जनतांत्रिक प्रक्रिया के फलस्वरूप भारत का पुराना संभावित जन पीछे हटता जा रहा है तथा उसकी जगह नए जन उभर रहे है। जिसमें पिछड़ी व अनुसूचित जातियां विषेशतः उल्लेखनीय हैं।

इसी प्रकार भारतीय अर्थव्यवस्था का विवेचन मुख्यतः दो स्तरों ग्रामीण अर्थव्यवस्था तथा नगरीय औद्योगिक अर्थव्यवस्था पर किया जा सकता है। इसके अन्तर्गत पटनायक, चट्टोपाध्याय तथा राम ने इन परस्पर विरोधी नीतियों के निश्कर्शों के परिणाम स्वरूप भारतीय स्वरूप भारतीय कृशि के स्वरूपों, उत्पादक शक्तियों तथा उत्पादन के सामाजिक सम्बन्धों का विश्लेशण किया है जबकि भादुरी व साहू ने भारतीय कृशि में समसामन्ती सम्बन्धों की प्रधानता का उल्लेख किया है।

हिन्दू दर्शन का नियामक आधारः व्यवस्था तथा परिवर्तन है। हिन्दू सांस्कृतिक परम्परा में व्यवस्था का स्वरूप उसके सामाजिक संगठन तथा क्रियाकलापों के आधार पर जाना जा सकता हैः श्रेणी क्रम की व्यवस्था जिसके अन्तर्गत जीवन के विविध स्तर, आश्रम व्यवस्था, आदि। उपनिशद तथा सांख्या हिन्दू दर्शन के आधार पर मानसिक उद् विकास प्रथम स्तर है– बुद्धि (मानसिकता का विकास, द्वितीय स्तर हैः अहम के प्रति चेतनशीलता, तृतीय स्तर हैः मन का विकास और चतुर्थ स्तर हैः पुरूष (सर्वोच्च रचना शक्ति) का विकास।

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में शक्ति की महत्ता को पश्चिमी दृष्टिकोण के अमूल्य स्वीकार नहीं करता। व्यक्ति की अपेक्षा समूह का महत्व परम्परागत भारतीय सामाजिक संरचना के प्रत्येक स्तर– परिवार, ग्राम, समुदाय, जाति, राजनैतिक क्षेत्र अथवा राष्ट्र में परिलक्षित होता है। ड्यूमा के अनुसार आधुनिक व्यक्ति दो स्वरूपों का प्रतिनिधित्व करता है– (क) नियामक आधार (सिद्धान्त) के रूप में। (ख) संस्था के प्रतिनिधि के रूप में।

नियामक आधार धर्म, धार्मिक विचार, ऊँच नीच की भावना, आत्मा एंव परमात्मा, परिवर्तन तथा परिवर्तन विहीनता, निर्माण व संहार, कर्म तथा मोक्ष आदि के प्रति विश्वास पर आधारित है। परम्परागत सामाजिक व्यवस्था में सामुदायिकता का प्रेरणा श्रोत है, निरन्तरता की मूल्य व्यवस्था, जो हिन्दू दर्शन में कर्म के

सम्प्रत्यय, आत्मा के पुनः प्रयास, पुनर्जन्म एंव परिवर्तन की चक्रीय प्रक्रिया, धार्मिक एंव धर्म निरपेक्ष भौतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों के बीच निरन्तरता के प्रतीकों के आधार पर प्रतीकात्मकता ग्रहण किए हुए हैं। भारतीय संस्कृति में काल क्रम, युग सोपनों की चक्रीय प्रक्रिया निरन्तर गतिशील है।

## आधुनिकीकरण के विभिन्न प्रभाव क्षेत्र एवं ग्रामीण महिलाएं

परिवेश चाहे कुछ भी क्यों न हो ग्रामीण अथवा नगरीय न्यूनधिक मात्रा में सभी आधुनिकीकरण से प्रभावित अवश्य हुए हैं, व्यक्ति; सवर्ण जाति का हो अथवा अनुसूचित व पिछड़ी, नर हो अथवा नारी, बाल हो अथवा बृद्ध सभी की मानसिकता को आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने परोक्षतः/प्रत्यक्षतः प्रभावित अवश्य किया है, क्षेत्र चाहे कुछ भी क्यों न हो सामाजिक हो अथवा व्यावसायिक, सांस्कृतिक हो अथवा राजनैतिक। चूंकि प्रस्तुत अध्ययन ग्रामीण अंचलों की शिक्षित युवतियों पर आधुनिकीकरण के पड़ने वाले सामाजिक–सांस्कृतिक प्रभावों तथा प्रस्थिति पर प्रभाव से सम्बन्धित है, अतः यहां ग्रामीण शिक्षित युवतियों का सन्दर्भ देना उपयुक्त ही होगा। आज शिक्षित युवतियां समाज के प्रत्येक क्षेत्र में पल–पल पर थिरकती, दौड़ती, कूदती, पहनती, ओढ़ती देखी जा सकती है, क्योंकि आज वे आधुनिकीकरण के प्रभावों से इतनी प्रभावित हैं कि उनकी भावनांए, आकांक्षाएं काफी कुछ परिवर्तन हो चुकी हैं। वे अब घर की चाहरदीवारी में परम्परावादी ढंग से कैद रहना नहीं चाहती अपितु मुक्त भावनाओं से पुरूषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर विकास की दिशा में सहभागी बनकर परिवार के दायित्वों को संयुक्त रूप में लेना चाहती है। अनुसंधित्सु ने प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत ग्रामीण शिक्षित युवतियों पर आधुनिकीकरण के आर्थिक प्रभावों के अन्तर्गतरू– आय, व्यय, व्यवसाय, के प्रति रूझाान, पारिवारिक बजट, नियोजन की दृष्टि से पारिवारिक सामंजस्य, आर्थिक प्रभावों के प्रति निदर्शितों के दृष्टिकोण आदि। सामाजिक प्रभावों के अन्तर्गतः– सामाजिक प्रस्थिति पर प्रभाव, महिलाओं की भूमिकाओं पर प्रभाव, मनोरंजन की शैली पर प्रभाव, फैशन का जीवन शैलीपर प्रभाव, सामाजिक प्रभावों के प्रति निदर्शितों के दृष्टिकोण दैनिक जीवन में प्रौद्योगिक परिवर्तन इत्यादि एवं धार्मिक व सांस्कृतिक प्रभावों के अन्तर्गतः– पूजापाठ, धर्मकर्म, व्रत/उपवास, धार्मिक विचारधाराओं में बदलाव और शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण तथा विभिन्न प्रकार की शिक्षाएं, मान्यताओं प्रथाओं तथा आदतों में परिवर्तन, मनोवृत्ति तथा बदलती हुई मानसिकताएं, धार्मिक तथा सांस्कृतिक परिवर्तनों के प्रति निदर्शितों के दृष्टिकोण आदि का अध्ययन करके प्राप्त तथ्यों के विवेचन को विशिश्ट सन्दर्भ में समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया हैं।

## सूचनादाताओं के आधुनिकीकरण के प्रति दृष्टिकोण

अनुसंधित्सु ने ग्रामीण महिला निदर्शितों पर आधुनिकीकरण के उनकी सामाजिक–सांस्कृतिक दशाओं पर पड़ने वाले प्रभावों को जानने की दृष्टि से उनके विचार जानने का भी प्रयास किया है, जिस पर निम्न तालिका संक्षिप्त प्रकाश डालती है।

**तालिका 1:** निदर्शितों की सामाजिक–सांस्कृतिक दशाओं पर आधुनिकीकरण को प्रकिया का प्रभाव पड़ा है अथवा नहीं, के प्रति सूचनादाताओं के अभिमत

| कमांक | निदर्षितों के अभिमत | आवृत्तियॉ | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | प्रभाव पड़ा है | 378 | 75.60 |
| 2 | प्रभाव नहीं पड़ा है | 95 | 19.00 |
| 3 | उत्तर प्रदान नहीं किए | 27 | 05.04 |
| | योग | 500 | 100.00 |

उपरोक्त तालिका के प्राथमिक आंकडों के विश्लेशण से स्पश्ट है कि ग्रामीण महिलों की सामाजिक सांस्कृतिक दशाओं पर आधुनिकीकरण का प्रभाव पड़ा है। निम्न तालिका में सामाजिक आधार पर निदर्शितों के अभिमत स्पष्ट किए है

**तालिका 2:** निदर्शितों की सामाजिक–सांस्कृतिक दशाओं पर (सामाजिक आधार पर) आधुनिकीकरण को प्रकिया का प्रभाव पड़ा है अथवा नहीं, के प्रति सूचनादाताओं के अभिमत

| कम | समाजिक आधार पर सूचनादाता | निदर्शितों की अभिमत (आवृत्तियों के अनुसार ) | | | योग (प्रतिशत) |
|---|---|---|---|---|---|
| | | प्रभाव पड़ा है | प्रभाव नहीं पड़ा है | कोई उत्तर नहीं | |
| 1 | सवर्ण | 203 (40.60) | 52 (10.40) | 13 (2.60) | 268 (53.60) |
| 2 | अनुसूचित व पिछड़ी | 175 (35.00) | 43 (8.60) | 14 (2.80) | 232 (46.40) |
| | योग (प्रतिषत) | 378 (75.60) | 95 (19.00) | 27 (5.40) | 50 (100.00) |

अनुसंधित्सु ने आधुनिकीकरण की प्रक्रिया द्वारा उनकी सामाजिक– सांस्कृतिक दशाओं पर पड़ने वाले प्रभावों की प्रकृति (सकारात्मक नकारात्मक) की भी जानकारी हासिल करने का भी प्रयास किया है जिस पर निम्न तालिका संक्षिप्त प्रकाश डालती है।

**तालिका 3:** आधुनिकीकरण की प्रक्रिया द्वारा निदर्शितों की सामाजिक–सांस्कृति दशओं पर पड़ने वाले प्रभावों की प्रकृति के सम्बन्ध में सूचनादाताओं के दृष्टिकोण

| क्रमांक | आधुनिकीकरण द्वारा पड़ने वाले प्रभाव की प्रकृति | सूचनादाताओं की आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | सकारात्मक | 200 | 40.00 |
| 2 | नकारात्मक | 168 | 33.60 |
| 3 | कोई प्रभाव नहीं | 105 | 21.00 |
| 4 | उत्तर प्रदान नहीं किए | 27 | 05.40 |
| | योग | 500 | 100.00 |

ग्रामीण परिवेश की शिक्षित महिलाओं ने यह स्वीकार किया है कि आधुनिकीकरण की प्रक्रिया से उनकी जीवनशैली के समाजिक सॉस्कृतिक पक्ष सकारात्मक दिशा में अभिमुखी हैं। निम्न तालिका सभी 500 निदर्शितों के सामाजिक आधार पर आधुनिकीकरण द्वारा उनकी सामाजिक–सांस्कृतिक दशाओं पर पड़ने वाले प्रभावों की प्रकृति पर संक्षिप्त प्रकाश डालती है उपलब्ध ऑकडों का प्रदर्शन जाति सापेक्ष किया गया है।

**तालिका 4:** आधुनिकीकरण की प्रक्रिया द्वारा निदर्शितों की सामाजिक–सांस्कृति दशओं पर पड़ने वाले प्रभावों की प्रकृति के सम्बन्ध में सामाजिक आधार पर निदर्शितों के दृष्टिकोण

| कम | समाजिक आधार पर निदर्षित | पड़ने वाले प्रभाव की प्रकृति (निदर्षितों की आवृत्ति के अनुसार) | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | सकारात्मक | नकारात्मक | प्रभाव नहीं पड़ा है | कोई उत्तर नहीं | योग |
| 1 | सवर्ण | 83 (16.60) | 60 (12.00) | 105 (21.00) | 20 (4.00) | 268 (53.60) |
| 2 | अनुसूचित व पिछड़ी | 117 (24.40) | 108 (21.60) | –– (00.0) | 7 (1.40) | 232 (46.40) |
| | योग (प्रतिषत) | 200 (40.00) | 168 (33.60) | 105 (21.00) | 27 (5.40) | 500 (100.00) |

उपर्युक्त प्राथमिक तथ्य यह सपश्ट करते हैं कि आधुनिकीकरण की प्रकिया का ग्रामीण परिवेश की शिक्षित महिलाओं पर सकारात्मक प्रभाव परिलक्षित होता है।

## निष्कर्श

आधुनिकीकरण के प्रभाव क्षेत्र ग्रामीण महिलाओं के विशेश प्रसंग मे किए इस शोध के आनुभविक तथ्य निम्नवत् प्राप्त हुए हैं।

1. सूचनादाताओं ने स्वीकार किया है आधुनिकीकरण के प्रभावों से ग्रामीण महिलाओं के पारम्परिक कार्यों में कमी आयी है।
2. सर्वोक्षित 500 महिलाओं सूचनादाताओं में से अधिकांश महिलाये सॉकृतिक पर प्रभाव पड़ने के पक्ष में हैं।
3. सामाजिक सॉस्कृतिक दशाओं पर आधुनिकीकरण का प्रभाव सकारात्मक दिशा में पड़ना स्वीकार किया है।
4. शत–प्रतिशत महिला सूचनादाताओं ने अपनी सामाजिक सॉस्कृतिक दशाओं पर आधुनिकीकरण के पड़ने वाले प्रभावों को न्यूनाधिक मात्रा में पड़ना स्वीकार अवश्य किया है।
5. महिला सूचनादाताओं ने स्वीकार किया है कि आधुनिकीकरण की प्रकिया से उनकी समाज में स्थिति उच्च हुई है, सामाजिक प्रस्थिति में सुधार हुआ है, यहॉ तक कि आज उन्हें समाज मे उचित सम्मान प्राप्त है तथा प्ररूशों के समान दर्जा मिलता है।
6. महिलाओं के कल्याणार्थ निर्मित विभिन्न सामाजिक विधान आधुनिकीकरण की ही देन हैं जो जीवन के हर पहलू पर उनकी सहायता करते हैं।

## सन्दर्भ सूची


1. उपाध्याय जनार्दन; 'सांस्कृतिक अवरोध' भारतीय समाज विज्ञान समीक्षा (विषेशांक) अंक–20–21, वर्श 1987–88, बी. एच.यू. वाराणसी, पृ. 59
2. पूर्वोक्त; 1988, पृ. 59
3. टायलर ई.बी.; प्रीमिटिव कल्वर, 1874, पृष्ठ 1
4. बोगार्डस इमोरी एस.; सोसियोलॉजी, 1960, पृष्ठ1
5. फिषर जे.एच.; सोसियोलॉजी, 1958, पृष्ठ 270
6. हर्शकोविट्स एम.जे.; मैन एण्ड हिज वर्क्स, 1956, पृष्ठ 17
7. बोरस्टीड आर.; सोसियोलॉजी, 1960, पृष्ठ 35
8. मैकाइवर एण्ड पेज; सोसाइटी, मैक मिलन एण्ड कम्पनी (लिमि) 1950, पृष्ठ 5
9. ऐलीचिर्नाय एण्ड सिलोप पी.; सेसायटी इन मॉडर्न एज, सिजाविक एण्ड जैकसन, लन्दन (तृतीय संस्करण), 1967, पृ 4
10. कौषाम्बी डी. डी.; दि कल्चर एण्ड सिविलाइजेषन ऑफ ऐन्सिएन्ट इण्डियाः ऐन हिस्टोरिकल आउट लाइन, विकास पब्लिषिंग हाउस (प्रा.लिमि.) दिल्ली 1976, चतुर्थ संस्करण, पृष्ठ 10